# वात्सल्य-भाव

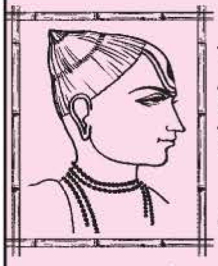

**कवि परिचय** – युगद्रष्टा गोस्वामी तुलसीदास जी भक्तिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं। भारतीय संस्कृति और सामाजिक मूल्यबोध के चितेरे तुलसी का जन्म मध्ययुग की विषम परिस्थितियों में माता हुलसी और पिता आत्माराम दुबे के घर, उत्तरप्रदेश के राजापुर ग्राम में श्रावण शुक्ला सप्तमी संवत् 1589 को हुआ। अशुभ मूल-नक्षत्र में जन्म लेने के कारण वे माता-पिता के द्वारा परित्यक्त हुए।

'रामचरित मानस', 'कवितावली', 'दोहावली', 'गीतावली', 'विनयपत्रिका', 'जानकीमंगल', 'पार्वती-मंगल', 'रामलला-नहछू' उनके प्रमुख प्रामाणिक ग्रंथ हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार तुलसीदास जी 'जीवनगाथा' के कवि हैं, मनुष्य के सम्पूर्ण भावों एवं व्यवहारों पर उनकी मजबूत पकड़ है। तुलसीदास जी ने रामचरित मानस के द्वारा श्रीराम के लोकरंजक एवं लोकमंगल स्वरूप को प्रतिष्ठित किया है। राम-राज्य के माध्यम से आदर्श राज्य की स्थापना उनके काव्य का प्रमुख उद्देश्य है, जो आज भी प्रांसगिक है। इस महाकाव्य में समाज के प्रत्येक 'संबंध' के मर्यादित आदर्श स्वरूप के दर्शन सहज ही हो जाते हैं। इसी कारण तुलसीदास जी जन-जन के मन में बसे हैं।

'रामचरित मानस' की रचना करके युगकवि ने जहाँ तत्कालीन विषम परिस्थितियों में शैव एवं वैष्णवों के मतभेदों को समाप्त करके उन्हें एकता के सूत्र में बाँधा, वहीं लोक-मानस में कर्तव्यबोध की अभिप्रेरणा ने नवीन दृष्टि उत्पन्न की। रामचरित मानस युग-युगान्तर तक समाज को नवजीवन प्रदान करने में सक्षम है।

तुलसीदासजी सच्चे अर्थो में करुणा के कवि हैं।

## हरिनारायण व्यास

**कवि परिचय** – हरिनारायण व्यास का जन्म मध्यमवर्गीय परिवार में 14 अक्टूबर सन् 1923 को ग्राम सुंदरसी जिला शाजापुर में हुआ। अभावों के मध्य उन्होंने उज्जैन और बड़ौदा में शिक्षा प्राप्त की। बाल्यावस्था से ही काव्य रचना में रुचि होने के कारण मामा गोपीवल्लभ उपाध्याय के बौद्धिक प्रभाव और प्रेरणा से वे आगे बढ़े। मुक्तिबोध, प्रभाकर माचवे और गिरिजाकुमार माथुर के सम्पर्क से आपकी काव्य रचना और अधिक पुष्ट हुई।

हरिनारायण व्यास की काव्य यात्रा सन् 1951 में अज्ञेय जी के 'दूसरा सप्तक' में सम्मिलित होने से विधिवत् आरम्भ हुई, 'मृग और तृष्णा' काव्य संकलन में उनके काव्य जीवन का प्रतिबिम्व है। सामाजिक विकास और वातावरण उनके बाहरी संघर्ष और आत्म विकास को प्रेरणा देता है, यही उनकी कविता को नया स्वरूप प्रदान करता है।

कवि की प्रमुख मान्यताएँ कविता को जीवन और प्रतीक से जोड़कर स्वरूप लेती हैं। आपके मतानुसार जीवन और समाज का एक प्रबल अस्त्र है – 'भाषा'; जो जीवन से अलग न होकर उसी में जीती है। व्यास जी कवि को सपनों का संसार कहते हैं; किंतु अपने आसपास के खुरदरे यथार्थ और जीवंत परिवेश से जुड़कर ही आपकी कविता का विकास रचनात्मक आयाम लेता है।

हरिनारायण व्यास की प्रमुख रचनाएँ हैं – 'मृग और तृष्णा', 'त्रिकोण पर सूर्योदय', 'बरगद के चिकने पत्ते', 'आउटर पर रुकी ट्रेन' आदि।

# केन्द्रीय भाव

पृथ्वी और मनुष्य का संबंध माँ और पुत्र का है। वैदिक ऋषि ने इसका उद्‌घोष करते हुए स्पष्ट किया है- ''माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:'' मनुष्य निरंतर पृथ्वी से पोषित होता है। पृथ्वी ने अपनी संतान मनुष्य के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर दिया है। पृथ्वी अब भी अपनी संतान, मनुष्य के प्रति वात्सल्य से परिपूर्ण है। माता-पिता और उनकी संतान के बीच जो शाश्वत प्रेमभाव क्रियाशील रहता है, वही वात्सल्य भाव कहा जाता है। वात्सल्य के अंतर्गत यद्यपि मातृभाव और संतान भाव का पारस्परिक आकर्षण हैं, किंतु संतान पक्ष का इसमें विशेष महत्व इस रूप में है कि वही वात्सल्य भाव का उत्प्रेरक होता है। शिशु का बाल सुलभ सौन्दर्य, वात्सल्य का आधार होता है। शिशु के अंग-प्रत्यंग की सुषमा, उसकी क्रीड़ाएँ, उसके हाव-भाव और उसकी बोली-बानी सब कुछ वात्सल्य भाव को जागृत करते हैं। काव्य में वात्सल्य को माता-पिता के शिशु संबंधी प्रेम के रूप में व्यक्त किया गया है।

शिशु के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर प्रकट होने वाला निश्छल प्रेम ही वात्सल्य का आधार है। काव्य के अंतर्गत संतान के प्रति जो माता-पिता का भाव होता है वही वात्सल्य रस में परिणत हो जाता है। हिन्दी काव्य में वात्सल्य केन्द्रित कविताओं की यद्यपि प्रचुरता नहीं है, किन्तु तुलसीदास, सूरदास और रसखान जैसे कवियों ने राम और कृष्ण की बाल-लीलाओं का विस्तार से वर्णन किया है। वात्सल्य के सघन और प्रभावशाली वर्णन में सूरदास हिन्दी के सिद्धहस्त कवि हैं।

आधुनिक कवियों ने वात्सल्य केन्द्रित कविताओं की रचना अपने युग के भाव-बोध के अनुरूप प्रस्तुत की है। वात्सल्य की आधार भाव-भूमियों की अपरिवर्तित स्थितियों के मध्य सम-सामयिक परिवेश में वात्सल्य की अनुभूतियों के प्रस्तुतीकरण में नए भावबोध का प्रयोग आधुनिक कवियों के काव्य में हुआ है। सुभद्राकुमारी चौहान, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, केदारनाथ अग्रवाल तथा हरिनारायण व्यास आदि ने वात्सल्य भाव को अपनी कविताओं में समाहित किया है।

तुलसीदास ने यद्यपि अपने महाकाव्य 'रामचरित मानस' में राम की बाललीला का संक्षिप्त वर्णन किया है, किन्तु उन्होंने अपनी कृति 'कवितावली' में राम की बालछवि और उनकी बाल-लीलाओं का विशद विवेचन किया है। वात्सल्य के अंतर्गत शिशु स्वरूप के सौंदर्य की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस संदर्भ में तुलसीदास ने शिशु राम की छवि का मनोहारी अंकन किया है।

प्रस्तुत कविता में शिशु राम के नेत्रों, मुख, देह-कांति, दंत-पंक्ति, आदि के मनोरम चित्रण के साथ ही उनकी बाल क्रीड़ाओं का अनुरंजनकारी दृश्यांकन किया है। तुलसीदास द्वारा प्रस्तुत बाल-वर्णन अनेक नवीन उपमाओं का आश्रय प्राप्त कर हृदयग्राही हो उठा है। शिशु के प्रति अनुरक्ति का प्रबल भाव तुलसीदास के इस काव्य में जाग्रत होता है।

हरिनारायण व्यास ने बच्चों की फूलों-सी पलकों, तितली की पांखों-सी उसकी आँखों, इंद्रधनुष-सी उसकी दृष्टि का अंकन करते हुए आज के संघर्षरत् व्यक्ति के वात्सल्य भाव को प्रस्तुत कविता में चित्रित किया है। इस कविता में शिशु की सुंदरता पर वह अपने संघर्षों की कठोर छाया नहीं डालना चाहता है। युगानुरूप प्रतीक बदलते रहते हैं - इसलिए नव बोध प्रदान करने की सामर्थ्य बदलते प्रतीकों के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है - वात्सल्य का यह रूप युग के अनुकूल है।

सोए हुए बच्चे से कविता में यथार्थवादी दृष्टिकोण और रेशमी बाल कल्पना के बीच द्वन्द्व उभरा है।

## कवितावली

अवधेस के द्वारें सकारें गई सुत गोद कै भूपति लै निकसे ।
अवलोकि हौं सोच बिमोचन को ठगि-सी रही, जे न ठगे धिक-से॥
तुलसी मन-रंजन रंजित-अंजन, नैन सुखंजन-जातक से।
सजनी ससि में समसील उभै नवनील सरोरुह-से बिकसे ॥ 1॥

पग नुपूर औ पहुँची करकंजनि मंजु बनी मनिमाल दिएँ ।
नवनील कलेवर पीत झँगा झलकै पुलकैं नृपु गोद लिएँ॥
अरबिंदु सो आननु रूप मरंदु अनंदित लोचन भृंग पिएँ ।
मनमोंन बस्यौ अस बालकु जौं तुलसी जग में फलु कौन जिएँ ॥ 2॥

तनकी दुति स्याम सरोरुह लोचन कंज की मंजुलताई हरैं।
अति सुंदर सोहत धूरिभरे छवि भूरि अनंगकी दूरि धरैं॥
दमकैं दतियाँ दुति दामिनि ज्यौं किलकैं कल बालविनोद करैं।
अवधेसके बालक चारि सदा तुलसी-मन-मंदिर में बिहरैं॥ 3॥

कबहूँ ससि माँगत आरि करैं कबहूँ प्रतिबिंब निहारि डरैं।
कबहूँ करताल बजाइकै नाचत मातु सबै मन मोद भरैं॥
कबहूँ रिसिआइ कहैं हठिकैं पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं।
अवधेसके बालक चारि सदा तुलसी-मन-मंदिर में बिहरैं ॥4॥

वर दंतकी पंगति कुंदकली अधराधर-पल्लव खोलन की।
चपला चमकैं घन बीच जगै छवि मोतिन माल अमोलन की॥
घुँघरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलन की ।
नेवछावरि प्रान करै तुलसी बलि जाउँ लला इन बोलन की ॥ 5॥

- तुलसीदास

## सोए हुए बच्चे से

मेरे ख्याल इतने खबसूरत नहीं हैं
जिनको मैं फूलों-सी खूबसूरत तुम्हारी पलकों को
छुआ दूँ और ये तुम्हारे लिए
खूबसूरत सपने बन जाएँ।

ये ख्याल इन दुनियादारी की
लपटों से झुलस गए हैं
पहाड़ों से टकराती नाव हैं,
नाकामयाबी की चोट से
ये लहूलुहान हैं।

तितली की पाँखों-सी
तुम्हारी आँखों में उगते हुए उजाले के
इन्द्रधनुष सपने
इनमें फँसकर बिखर जाएँगे।

बिवाईं वाली इन पथरीली हथेलियों से
तुम्हारे रेशमी बालों की
शैशवी लापरवाही को स्पर्श नहीं करूँगा।

फटी हुई चमड़ी में उलझकर
कोई बाल कोई रंगीन मनसूबा कोई
कामयाब भविष्य
टूट जाएगा
आने वाला जमाना,
मुझे दोषी ठहराएगा।

तुम्हारी पलकों में तैरती
उनींदी पुतलियों पर

सेमल की रूई-सी
सुबह की नींद
जागने से पहले की खुमारी
मँडरा रही है
और तुम्हारा मन
आतुर है कुलाँचें भरने।

हम तुम ही से तो अपनी अहमियत
पहचानते हैं
तुम हो इसीलिए तो हमारी भूख-प्यास
मकसद रखती है।

मैं तुम्हारे गालों को
बीमार ओठों की छुअन से नहीं जलाऊँगा

तुम इसी तरह मुस्कुराते सोये रहो
सूरज खुद तुमको जगाएगा।

**- हरिनारायण व्यास**

# अभ्यास

## बोध प्रश्न

### अति लघु उत्तरीय -

1. सखी प्रातःकाल किसके द्वार पर जाती है ?
2. बालक राम किस वस्तु को माँगने का हठ करते हैं ?
3. बच्चे की आँखों की तुलना किससे की गई है ?
4. तुलसीदास जी के मन मंदिर में सदैव कौन विहार करता रहता है ?
5. ईश्वर ने रोगों को दूर करने के लिए मनुष्य को क्या दिया ?

### लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. सखी ठगी सी क्यों रह गई ?
2. माताएँ बालक राम की कौन-सी चेष्टाओं से प्रसन्न होती हैं ?
3. बालक राम का मुख-सौंदर्य कैसा है ?
4. बच्चे के रेशमी बालों को कवि अपनी हथेलियों से क्यों स्पर्श करना नहीं चाहता?

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. तुलसीदास ने बालक राम के किस स्वभाव का चित्रण किया है ?
2. 'तुलसी ने बालहठ' का स्वाभाविक चित्रण किया है। इस उक्ति को पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।
3. हरिनारायण व्यास ने अपने 'ख्यालों' की किन कमियों की ओर संकेत किया है ?
4. निम्नांकित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

( अ ) 'पग नूपुर औ पहुँची कर कंजनि ..................................................

........................................................ तुलसी जग में फलु कौन जिएँ।'

**अथवा**

'कबहूँ ससि माँगत आरि करैं ....................................................

..................................................... तुलसी-मन-मंदिर में बिहरैं।'

( ब ) ये ख्याल इस दुनियादारी की /लपटों से झुलस गए हैं

पहाड़ों से टकराती नाव हैं / नाकामयाबी की चोट से / ये लहूलुहान हैं।

**अथवा**

फटी हुई चमड़ी में उलझकर /कोई बाल, कोई रंगीन मनसूबा,कोई कामयाब भविष्य/

टूट जाएगा / आनेवाला जमाना / मुझे दोषी ठहराएगा।

**ध्यान दीजिए -**

किसी काव्य या साहित्य को पढ़ने, सुनने या देखने से पाठक श्रोता या दर्शक को जिस आनंद की अनुभूति होती है उसे रस कहते हैं। भरतमुनि के अनुसार ''विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रस निष्पतिः'' जब स्थायी भाव का संयोग विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भावों से होता है तब रस की निष्पत्ति होती है। रस के चार अंग होते हैं– स्थाई भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव।

**राम को रूप निहारति जानकी कंकन के नग की परछाहीं।**
**यातैं सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही पल टारत नाहीं॥**

उपयुक्त उदाहरण में आलंबन – राम, आश्रय-सीता, संचारी भाव – सुधि भूलना, स्थाई भाव – रति है।

1. **स्थायी भाव** –
सहृदय के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं उन्हें स्थायी भाव कहते हैं। प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव होता है। इनकी संख्या दस है।

| | रस | | स्थायी भाव |
|---|---|---|---|
| 1. | श्रृंगार रस | – | रति |
| 2. | शांत रस | – | निर्वेद |
| 3. | करुण रस | – | करुणा, शोक |
| 4. | हास्य रस | – | हास |
| 5. | वीर रस | – | उत्साह |
| 6. | रौद्र रस | – | क्रोध |
| 7. | भयानक रस | – | भय |
| 8. | वीभत्स रस | – | जुगुप्सा या घृणा |
| 9. | अद्‌भुत रस | – | विस्मय |
| 10. | वात्सल्य रस | – | वत्सल |

2. **विभाव** – स्थायी भावों के उत्पन्न होने के कारणों को विभाव कहते हैं। इसके दो भेद हैं-आलंबन और उद्दीपन।
**आलंबन** – जिसके प्रति स्थायी भाव उत्पन्न हो, वह आलंबन कहलाता है। आलम्बन के दो अंग हैं-आश्रय और विषय
**आश्रय** – जिस व्यक्ति के मन में भाव जाग्रत हों और **विषय**-जिसको देखकर मन में भाव जाग्रत हों।
**उद्दीपन** – भावों को बढ़ाने या उद्दीप्त करने वाले पदार्थ उद्दीपन कहलाते हैं ।
3. **अनुभाव** – आश्रय की बाह्य शारीरिक चेष्टाओं को अनुभाव कहते हैं।
4. **संचारीभाव** – आश्रय के चित्त में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। इसे व्यभिचारी भाव भी कहा जाता है। निर्वेद, ग्लानि, मद, स्मृति, शंका, आलस्य, चिंता, दीनता, मोह आदि संचारी भाव हैं, इनकी कुल संख्या 33 मानी गई है।

**प्रश्न- रस की परिभाषा देते हुए रस के अंगों को उदाहरण सहित समझाइए ।**

**और भी समझिए -**

**जसोदा हरि पालनैं झुलावै ।**
**हलरावैं, दुलरावैं मल्हावैं, जोइ-सोइ कछु गावैं।**
**मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहे न आनि सुवावै।**

इन पंक्तियों में माता यशोदा के कृष्ण के प्रति वात्सल्य का चित्रण है। सहृदय के हृदय में स्थित वत्सल नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है तब वहाँ वात्सल्य रस होता है।

| | | |
|---|---|---|
| स्थायी भाव | – | वत्सल |
| आश्रय | – | यशोदा |
| आलंबन | – | बालकृष्ण |
| उद्दीपन | – | कृष्ण की नींद को बुलाना उनका पलकें मूँदना |
| अनुभाव | – | यशोदा की क्रियाएँ |
| संचारी भाव | – | शंका, हर्ष |

**प्रश्न** – वात्सल्य रस को परिभाषित करते हुए एक उदाहरण दीजिए ।

## योग्यता-विस्तार

1. तुलसीदास के रामचरित मानस के बालकांड से अन्य पद खोजकर पढ़िए।
2. अन्य कवियों के वात्सल्य रस की रचनाएँ संकलित कीजिए और हस्तलिखित पुस्तिका तैयार करिए।
3. अपने परिवेश में बोले जाने वाले कुछ देशज शब्दों की सूची बनाइए ।

## शब्दार्थ

**अवधेस** = (अयोध्या के राजा) राजा दशरथ। **सकारे** = सबेरे। **निकसे** = निकले। **अवलोकिहों** = देख करके। **सोच-विमोचन** = चिंता दूर होना। **धिक्कसे** = धिक्कार। **मनरंजन** = मन को प्रसन्न करने वाले। **रंजित-अंजन** = काजल लगाए हुए। **जातक** = शिशु। **सजनी** = सखी। **ससि** = चन्द्रमा। **समसील** = एक जैसे आचरण वाले। **सरोरुह** = कमल। **विकसे** = खिले। **पहुँची** = कलाई में पहनने वाला गहना। **कर-कंजनि** = कमल रुपी हाथ। **मंजु**=सुंदर। **मनिमाल** = मणियों की माला। **हिए** = हृदय। **कलेवर** = शरीर। **अरविंदु** = कमल। **आननु** = मुख। **मरंदु** = पराग। **लोचन**=नेत्र। **भृंग** = भँवरा। **दुति** = आभा। **कंज** = कमल। **मंजुलताई** = शोभा। **हरैं** = हरण करते हैं। **अनंग** = कामदेव। **दामिनि** = बिजली। **बिहरै** = विहार करें। **आरि** = हठ। **निहारि** = देखकर। **करताल** = ताली। **मोद** = प्रसन्नता। **रिसिआई** = क्रोधित होकर। **अरै** = हठ करें। **वर** = श्रेष्ठ। **पंगति** = पंक्ति। **अधराधर** = दोनों अधर (ओष्ठ)। **पल्लव** = पत्ते। **चपला** = बिजली। **घन** = बादल। **लोल** = सुंदर। **कपोलन** = गालों पर

**ख्याल** = विचार। **मनसूबा** = इरादा। **कामयाब** = सफल। **दुनियादारी** = सांसारिकता। **लहूलुहान** = खून से लथपथ। **बिवाई** = फटा हुआ। एड़ी का फटना।